गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037
नवम्बर-दिसम्बर 2023
Vol. 11, Issue 11-12

Impact Factor : 4.553

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

संपादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	06-06
2.	आज के युग में दृश्य-श्रव्य अनुवाद : एक संक्षिप्त परिचय	अनुश्री पी. एस.	07-12
3.	अनुवाद संकल्पना के संदर्भ में मानक अनुवाद में पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. रंजीत कुमार	13-24
4.	वैश्वीकरण दौर में भारतीय शिक्षा और भूगोल शिक्षण	डॉ. नटवर तेली	25-29
5.	Nirad C Chaudhury : AS AN AUTOBIOGRAPHER	Poonam Yadav	30-34
6.	ज्ञान चतुर्वेदी की रचना 'पागलखाना' में व्यक्त सामाजिक चेतना	कु० विजय लक्ष्मी, डॉ० राकेश चन्द्र	35-39
7.	THE TECHNIQUE OF PLAY OF BOYS AND GIRLS FOOTBALL PLAYERS OF JAIPUR REGION	Ms. Monika Pundhir, Dr. Surjeet Singh Kaswan	40-44
8.	निजी महाविद्यालयों के स्नातकोत्तर स्तर के वाणिज्य वर्ग के शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व तथा समायोजन का अध्ययन	आरती भांभू, डॉ. सुमन कुमारी	45-50
9.	संस्कृत साहित्य में नारी का महत्व	डॉ. नवीन कुमारी	51-53
10.	समकालीन चयनित हिंदी उपन्यासों में तृतीय लिंग की सामाजिक संघर्ष	प्रो. डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, डी श्रीदेवी	54-57
11.	कालिदास के नाटकों में सौन्दर्य	डॉ. नवीन कुमारी	58-60
12.	भीमरावाम्बेडकरचरिताश्रितकाव्येषु महापरिनिर्वाणम्	कृति यादव	61-64
13.	जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'छप्पर' में अम्बेडकरवादी दर्शन	अजय कुमार चौधरी	65-69
14.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर भावात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. नितिन, सुनीता यादव	70-74
15.	रमणिका गुप्ता के कथा-साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष	श्वेता कुमारी	75-77
16.	माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक आकांक्षा और समस्या हल करने की क्षमता पर अध्ययन की आदतों के प्रभाव का अध्ययन	रचना, डॉ. रेनु कंसल	78-88
17.	कुसुम खेमानी की कहानियों में नारी संवेदना	उमा यादव, करसन रावत	89-92
18.	मानव जीवन में शब्दों की महत्ता	डॉ. सुशील चन्द्र बहुगुणा	93-97
19.	आदिवासी बॉक्सिंग खिलाड़ियों पर मानसिक प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन	जुबेर खान, डॉ. गजेन्द्र सिंह सरोहा	98-104

संगम Impact Factor : 4.553 Website : www.ginajournal.com ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक Vol. 11, Issue 11-12
पृष्ठ : 54-57

समकालीन चयनित हिंदी उपन्यासों में तृतीय लिंग की सामाजिक संघर्ष

प्रो. डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, शोध निर्देशिका,
डी श्रीदेवी, शोधार्थी,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज, पल्लवरम, चेन्नई।

भारतीय समाज में बहुत से वर्ग विकृत परंपराओं के कारण त्रासदी जीवन व्यापक करते हैं उनमें सर्वाधिक उपेक्षित वर्ग हैं – तृतीय लिंग। तृतीय लिंग को किन्नर, छक्का, हिजड़ा नपुंसक, मौसी, उभय लिंग, खसरा आदि नाम से संबोधित करते हैं। लोक जीवन में हिजड़ा, किन्नर आदि शब्द को गली का प्रतीक बन चुका है। समाज में शारीरिक रूप से कमजोर पुरुषों के व्यक्तित्व को हिजड़ा कहते हैं। समाज में हिजड़ा को तिरस्कृत एवं अपमान करना सामान्य सी बात है। तृतीय लिंग अपनी अलिंगन जिसम को लेकर जीवन के अंतिम तक तिरस्कृत, घृणा, नफरत, अपमान और संघर्ष से ही जीवन यापन करना पड़ता है। तृतीय लिंग की संघर्ष के बारे में नीलिमा शर्मा जी के कविता में इस प्रकार कहते हैं :–

"न नर हूँ, न नारी हूं न ही माँ किसी की और न बाप हूं।
हूँ ईश्वर की एक विकृत रचना या खुद के लिये ही श्राप हूं।।"[1]

उक्त पंक्तियां में तृतीय लिंग ने ईश्वर से प्रश्न कर रहे हैं कि इस समाज में हमारे क्या स्थान है, क्या ईश्वर भी गलती कर सकते हैं। ये सारी दुनिया भगवान की रचना है। इंसान में स्त्री पुरुष दोनों संपूर्ण है। लेकिन तृतीय लिंग का स्थान क्या है। यह शब्द मानो श्राप सा प्रतीक होता है।

परिवार का तिरस्कार :-

परिवार ही हर बच्चे के मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, नैतिक तथा चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। हर बच्चे परिवार से ही अपने जीवन के मूल्यों का विकास करता है। वह विभिन्न आदर्शों तथा मानवीय गुणों को विकसित करते हैं। परोपकार, दया, सहानुभूति, परिश्रम, समानता, प्रेम, त्याग, बलिदान आदि गुणों के विकास में परिवार की अहम भूमिका है। हर बच्चे परिवार में ही अनुशासन का प्रथम पढ़ता है। भगवत अनमोल कृत 'जिंदगी 50–50' सकारात्मक दृष्टिकोण से लिखा हुआ एक उपन्यास है। उपन्यास का कथा नायक अनमोल का बेटा सूर्य पैदाइश तृतीय लिंग है। अपने बेटे के खबर सुनते ही अनमोल को अपने छोटे भाई हर्षा जो तृतीय लिंग है उसका याद आता है। समाज और परिवार के लोग हर्षा को परिहास करते हैं। वह बहुत कठिनाई से जीवन बिताता है। हर्ष के पिता राम लखन तिवारी अपने तृतीय लिंग बेटे के लिए मन में सिर्फ

नफरत, क्रोध की भावना रखते हैं। वह अपने परिवार की मान मर्यादा और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए अप
को सिर्फ लैंगिक विकलांग के कारण जहर देने के लिए तैयार होता है। समाज में सभी लोग उसे 'किन्न
पापा पुकारेंगे। इस संकीर्ण सोच की वजह हुए हर्षा को जहर देने के लिए तैयार होता है। "मैं बाहर निकला
था, अम्मा के पास। वह बाहर तक गये, एक बार इधर–उधर देख रहा देखा पर कोई नहीं दिखाई दिया।
वह फिर से नल के पास आए और पास में रखे गिलास में थोड़ा पानी लेकर दवा को घोलने लगे और चल
उन्हें सामने कुछ नहीं दिखाई दे रहा था, सही–गलत का अंदाजा ही नहीं। इस काम के बाद होने वाले फी
से भी उन्हें कोई लेना–देना न था। बस उन्हें सिर्फ अपनी इज्जत प्यारी थी। यह समाज उसे बेटे के
उन्हें कुछ कहा न पाये, इस बात की फिक्र थी। जबकि उसे बेटे की कतई फिक्र न थी, जिसके वे बाप

महेंद्र भीष्म जी के उपन्यास "मैं पायल" में जुगनी के पिताजी उसे पुत्र का नाम न लेकर 'हिजड़ा सा
जैसे शब्दों से अपना आक्रोश अभिव्यक्त करते हैं। जुगनी को उसके पिताजी बहुत मारते–पीटते और खून
के लिए भी तैयार हो जाते हैं। "पिताजी ने पास रखी बाल्टी में भरे पानी से मुझे नहला दिया, फिर वही
चामडे की चप्पल को टब में भर पानी में डुबाडुबाकर मेरे नग्न शरीर की उधेड़ने में लग रहे जब तक कि मैं बेह
नहीं हो गई। पल भर के लिए होश आता देखती अम्मा मेरी ऊपर लेटी पिताजी की चप्पलों से पिट रही थी,
वह मुझे बचाते हुए स्वयं कितनी देर तक पिटती रही पता नहीं मैं तो कब की बेसुध हो चुकी थी।"[3] पिताजी
इस घोर यातन से जुगनी अपने जीवन को समाप्त करने का मन बनती है।

शिक्षा का अभाव :-

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा का उद्देश्य है किसी भी विषय
आत्मानुभूति (Self Realization) के रूप में ही स्वीकार करना है। क्योंकि इससे संबंध मनुष्य के वैयक्तिक
सामाजिक दोनों प्रकार से विकास होता है। राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गांधी जी का कथन है "शिक्षा से मे
अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की अभिव्यक्त हैं।"[4] शिक्षा के माध्य
से ही समाज के सदस्यों के आचार विचार में परिवर्तन होता है। शिक्षा जैसी होती है वैसा ही समाज होता
वैसी शिक्षा होती है जैसा ही समाज होता है। तृतीय लिंग के जीवन शैली को बदलने और अपने आप को महसू
करने के लिए शिक्षा ही मदद करता है। तृतीय लिंग समुदाय का बेहतरीन करने के लिए हर एक तृतीय लिं
को पढ़ाई करना आवश्य है। शिक्षा ही उन्हें जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से मुक्त करने का एकमात्र रास्ता है
चित्रा मुद्गल जी अपने उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा' में तृतीय लिंग बिन्नी के माध्यम से कहत
"पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है। कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा गया है, हमारे लिए।"[5]

यह समाज तृतीय लिंग को शिक्षा के अधिकार से भी वंचित करता है। स्कूल या कॉलेज के फॉर्म में तृतीय
लिंग के लिए कोई अलग सा लिंग कॉलम में जगह भी नहीं देते हैं। शिक्षा हर एक व्यक्ति को मिलना आवश्यक
है। डॉ. लता अग्रवाल की उपन्यास 'मंगलामुखी' में शिल्प गुरु मां और शकुन तृतीय लिंग महेंद्री के बारे में बात
करते समय उसकी अधूरी पढ़ाई के बारे में कहती हैं "क्या स्कूल में इनको पढ़ने के लिए कोई सुविधा या
अधिकार नहीं है नहीं हैं.....? नहीं तू देखी कभी सरकार ने स्कूल के फारम में लड़का/लड़की के अलावा कोई
और खाना बनाया?"[6]

बलात्कार :-

बलात्कार एक अत्याचारी और नैतिक अपराध है एक व्यक्ति किसी के साथ असहमत संबंध करने का प्रयास करता है, उसे बलात्कार कहते हैं। जब 'मैं पायल' की नायिका जुगनी घर से बाहर निकलकर अपनी ठिकाना खोजने के लिए बाहरी दुनिया में आई। तब इस समाज उसे एकाकी स्त्री के रूप में देखकर भूखे भेड़िए बनी इंसानी शोषण करता है। इससे पीड़ित होकर जुगनी मन ही मन सोचती है "हे भगवान्! यह मैं ही जानती हू और जानती होगी वे सब स्त्रियों जो मेरे जैसी स्थिति से अक्सर दो–चार होती होगी या कभी परिवार से अलग–थलग पड़ गयी होगी। देह के नरभक्षी भेड़ियो की चुभती नजरों को बड़ी शिद्दत से महसूस किया होगा, जो मादा गंध के उठते ही खूंखार हो उठते हैं और मौका मिलते ही दबोच लेने के लिए उतार वाले बने रहते हैं। सारी जोर आजमाईश के बाद क्रूरता, नग्नता पर उतर आते हैं और मसला देना चाहते हैं नारी देह को। नोच–खचोट के साथ अपनी बर्बरता की निशानियां उस पर छोड़ देना चाहते हैं, तब तक जब तक कि वह स्वयं पिघल नहीं जाते और पिघलने के बाद लतियाए कुत्ते की तरह कुं–कूं करते खो जाते हैं अंधे समाज के अंधेरे कोनों में।"

चित्रा मुदगल जी के "पोस्ट बॉक्स नंबर नालासोपारा 203" के पूनम जोशी तृतीय लिंग पात्र है। पूनम, विधायक जी के कोठी पर नृत्य कार्यक्रम करती है। उसके बाद जब पूनम अपने कपड़ों को बदल रही है। तब विधायक जी के भतीजा और उसके मित्र कमरे में जबरदस्ती प्रवेश करते हैं। उसके साथ सामूहिक बलात्कार होता है। तृतीय लिंगी के किसी भी प्रकरण पर इस समाज गूंगा और बहरा बन जाता है। क्या तृतीय लिंग की शारीरिक पीड़ा का कोई मोल नहीं है? क्या मानवीय दृष्टि के इस अत्याचार के लिए कोई समाधान नहीं है? चित्रा जी पूनम जोशी के माध्यम से व्यक्त करती है "एकाध पैग मजे में और चढा लेंगे। कभी नहीं देखा जिस चीज को उसे देखे का सेलिब्रेशन होना ही चाहिए न? क्यों वह आम लड़कियों की तरह लजाने का नाटक कर हमारा और अपना समय जाया कर रही। दिल्ली में आम बात है। सड़क चलते हिजड़े भीख न देने पर बेशर्मी से साड़ी उठने लगते हैं। भई, हम भी देखें असली–नकली औरत का फर्क? जितना चाहे, रकम ले लेना। वह भी डॉलर में। छटपटाती लात घूसों से परे धकेलती पूनम जोशी ने स्वयं को उसने मुक्त करने की कोशिश की। वहशियों ने उठाकर झुलते हुए उसे बेरहमी से फर्श पर चित्त पटक दिया। मुंह में उसके ठूंस दी सतरंगी किराये की चुनरी।"[8]

लैंगिक भेदभाव :-

लैंगिक भेदभाव एक सामाजिक समस्या है। लैंगिक भेदभाव के कारण भारत में तृतीय लिंग लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित हैं। धार्मिक और सामाजिक विचारों में लिंग भेद का पालन किया जाता है, जिससे लोगों की मानसिकता में भी भेद पड़ता है। महेंद्र भीष्म जी के उपन्यास "मैं पायल" में जुगनी एक जन्मजात तृतीय लिंग है। जुगनी के पिताजी उसे लड़के के रूप में ही पाल–पोष करते हैं। अपने पिताजी के कहने के अनुसार वह अपनी लंबी बाल को काटा और लड़के जैसे स्कूल जाती है। तब उनकी सहपाठियों उसे देखकर हंसते और चिढ़ाते हैं। "मेरी सुंदर, लंबे काले बाल अब लड़कों की तरह काटकर संवार दिया गए थे। मेरे संगी साथी मुझे पहचान नहीं पाए वह हैरान थे। उनके मध्य मैं चर्चा का विषय बन गई..... 'अरे! यह जुगनी.... अरे जुगनी तो लड़की से लड़का बन गई अब वह 'जुगनी' नहीं 'जुगनू' हो गया है' हो होकर हंसते

और मुझे चिढ़ाने की कोशिश करते, पर तीनों बड़ी बहनों की तरह उजह से भयग्रस्त वे जल्दी से चुप कर जा पर उनमें मुझे लेकर परस्पर कानाफूसी चलती रहती, जो मुझे बखूबी समझ आती थी।"

वेश्यावृत्ति :-

वेश्यावृत्ति के संबंध जियोके Encyclopedia of Social Science में कहते हैं "वेश्यावृत्ति संसार का सब पुराना व्यवसाय है और यह तभी से चल आ रहा है। जब से किसी समाज के लोगों की काम भावनाओं को वि और परिवार के सीमित किया गया है।"[10] विवाह की संस्थान की उत्पत्ति के साथ–साथ कुछ यौन निषेध विकसि हुए। अतिरिक्त यौन संबंधों को अवैध समझा जाने लगा। ऐसे कारण से ही वेश्यावृत्ति की उत्पत्ति हुई। डॉ. ल अग्रवाल के उपन्यास 'मंगलामुखी' में तृतीय लिंग सिमरन कहती हैं कि तृतीय लिंग को बड़े–बड़े लोगों अ पार्टी में नाचने के लिए बुलाते हैं और हमसे गलती काम करते हैं। बदनाम भी हमको ही दे देते है। हमारे वेश्यावृत्ति काम तो अच्छा नहीं है, लेकिन हमारे लिए इसकी सिवा कोई रास्ता भी नहीं है। "बच्चे भी घरों में दो इ होते हैं, उन पर भी रो–रो कर न्योछावर मिलती है, कोई काम हमारे पास है नई तो कुछ बड़े–बड़े लो के दलाल हमारे पास आते हैं कि फलाँ पार्टी में हमारा पैसा खाया है...उससे उगलवाना है, बस आजकल बधा गाने के साथ–साथ यह काम शुरू किया है.... काम अच्छा नइ है इसलिए तुझे बताने से चुरा रये थे और को बात नइ। लोग कितने ही काला पीला कर ले मगर अपनी इज्जत को लेके बड़े डरते हैं।"[11]।

मालती मिश्रा के उपन्यास 'मंजरी' में तृतीय लिंग मंजरी कोर्ट में न्यायाधीश फैसला सुनाने से पहले अप समुदाय की दुखमय में जीवन के बारे में बताती हैं। तृतीय लिंग समुदाय कमाई और रोजगार चलाने के लिए ह दिन कितने संघर्ष सामना करना पड़ता है। इस समाज ने तृतीय लिंग को अपराधी मानते हैं। मंजरी अपनी तर से यह कहती हैं "इससे भी ऊपर, पैसा कमाने और अच्छा जीवनयापन के लिए वह बाकायदा सेक्स वर्क भी क चुके हैं। इसमें वह बहुत एक्सप्लॉयट किए जाते हैं बाहुबलियों द्वारा। परंतु बिना बोले वो यह सब बर्दाश कर के लिए मजबूर है। कमाई के बहुत साधन भी तो नहीं उनके पास।"[12]

निष्कर्ष :- इस समाज में अभिशप्त जीवन जीने वाले तृतीय लिंग को समाज के मुख्य धारा से जोड़ने के लि हमें प्रयत्न करना चाहिए। तृतीय लिंग समूह को हेय दृष्टि से देखने वाले इस समाज की मानसिकता को तोड़ना चाहिए। अगर तृतीय लिंग अपने परिवार की सहयोग से शिक्षित हो जाए तो उनका जीवन उज्जवल रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. डॉ विजेंद्र प्रताप सिंह, थर्ड जेंडर अस्मिता और संघर्ष, अमन प्रकाशन, कानपुर, पृ. सं. 119
2. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50–50, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली, प्र.सं. 2017, पृ. सं. 40
3. महेंद्र भीष्मा, मैं पायल अमन प्रकाशन कानपुर चतुर्थ संस्करण 2019, पृ. सं. 36
4. पी.डी. पाठक, शिक्षा मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पांचवी संस्करण 2011, पृ. सं. 11
5. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा, पेपर बैग्स नई दिल्ली, छठा सं. 2020, पृ. सं. 110
6. डॉ. लता अग्रवाल, मंगलामुखी, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं. 2020, पृ. सं. 56
7. महेंद्र भीष्मा, मैं पायल अमन प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ संस्करण 2019, पृ. सं. 57
8. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा, पेपर बैग्स नई दिल्ली, छठा सं. 2020, पृ. सं. 203
9. महेंद्र भीष्मा मैं पायल अमन प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ संस्करण 2019, पृ. सं. 29
10. प्रो. आनंद प्रकाश सिंह, वैशाली प्रसा, सामाजिक समस्याएं और अपराध, पृ. सं. 213
11. डॉ. लता अग्रवाल, मंगलामुखी, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं 2020, पृ. सं. 110
12. मालती मिश्रा, मंजरी, रश्मि प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2022, पृ. सं. 126

sridevipalani21@gmail.com
फोन नं. 9952951435